2 थिस्सलुनीकियों (भाग 1)
पद-दर-पद पुस्तक अध्ययन
08 अक्टूबर, 2023

2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 1
यह दूसरी पत्री पहली पत्री के कुछ ही समय बाद, लगभग 52 ईस्वी में लिखी गयी थी। संभवतः पहली पत्री लिखने के कुछ ही सप्ताह के भीतर यह लिखी गयी थी। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया से जब वापस उत्तर सुना होगा या वे कैसे कर रहे हैं इसके बारे में उसे समाचार मिला होगा, तब उसने कुछ मामलों पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता महसूस की होगी।

इस दूसरी पत्री को लिखने के पीछे मुख्य रूप से दो कारण प्रतीत होते हैं:
1) ऐसा लगता है कि कुछ लोग थे जिन्होंने पौलुस की बातों को गलत तरीके से पेश किया था, यह संकेत देते हुए कि पौलुस ने कहा है कि 'प्रभु का दिन' पहले ही आ चुका है (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-3)। इसलिए, पौलुस को स्पष्ट करना पड़ा और प्रभु का दिन कब तक आने की संभावना है, इस पर अधिक विवरण देना पड़ा।

2) ऐसा लगता है कि कुछ विश्वासियों को लगा कि शायद अब काम करना ज़रूरी नहीं है, क्योंकि दुनिया का अंत निकट है। वे गपशप और बेकार की बातों में लगे रहते थे। पौलुस को उनके साथ बहुत सख्त होना पड़ा और इस दूसरी पत्री के (3:8,12) में काम के महत्व को बहुत कड़े शब्दों में बार-बार कहना पड़ा, जिसका उल्लेख उन्होंने पहली पत्री में भी किया था।

अभिवादन
1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है:
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।
न्याय का दिन
3 हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम सब का प्रेम आपस में बहुत ही बढ़ता जाता है।
4 यहाँ तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है।

पौलुस धन्यवादी है और विश्वासियों के इस फलते-फूलते समुदाय का आनन्द मनाता है। पहली पत्री की तरह, वह उन सताव और कष्टों के बावजूद उनके विश्वास, प्रेम और सहनशीलता (आशा से भरी दृढ़ता) के लिए उनकी प्रशंसा करता है, जिनका उन्हें सामना करना पड़ा था।

हमारा विश्वास बढ़ सकता है।
हमारा प्रेम अधिक बढ़ सकता है।

जब वह उस दिन आएगा
2 थिस्स्लुनिकियों 1:5-10
5 यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, जिसके लिये तुम दुख भी उठाते हो।
6 क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे

[7] **और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा,**
[8] **और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।**
[9] **वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे।**
[10] **यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया।**

पौलुस इन विश्वासियों को उनके विश्वास, आशा और प्रेम के मार्ग में प्रोत्साहित करने के लिए एक बार फिर "परमेश्वर के राज्य" और प्रभु यीशु के आगमन की याद दिलाता है।

इन दो आगमनों पर ध्यान दें और उनके बीच के अंतर को समझें:
इन दोनों आगमनों का विवरण, उद्देश्य और विस्तार बहुत अलग और स्पष्ट हैं, जिससे हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि प्रेरित पौलुस दो अलग-अलग घटनाओं का उल्लेख कर रहा है।

1 थिस्सलुनीकियों 4:14-18 और 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10

1 थिस्सलुनीकियों 4:14-18	**2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10**
➢ जो यीशु में सो गए (अर्थात जो मर गए हैं), परमेश्वर उन्हें अपने साथ ले आएगा (वचन 14) ➢ प्रभु का आगमन (वचन 15) ➢ हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे... वे किसी भी रीति से उनसे आगे न बढ़ेंगे जो सो गए हैं (पद 15) ➢ क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ग से ललकार, प्रधान दूत के शब्द, और परमेश्वर की तुरही के साथ उतरेगा (वचन 16) ➢ जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे (पद 16) ➢ तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें (वचन 17) ➢ और इस प्रकार हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे (वचन 17)	➢ प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ स्वर्ग से प्रकट होगा (वचन 7) ➢ वह धधकती हुई आग में उनसे बदला लेगा जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते (वचन 8) ➢ वे प्रभु की उपस्थिति और उसकी शक्ति की महिमा से दूर होकर अनंत विनाश का दंड पाएंगे (वचन 9) ➢ जब वह उस दिन आएगा (वचन 10) ➢ ताकि वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाए और आश्चर्य का कारण बने (वचन 10)

हम तुम्हारे लिए सदा प्रार्थना करते हैं

- **वचन 11,12:**

[11] **इसी लिये हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे,**
[12] **ताकि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उस में।**

पौलुस उन्हें बताता है कि वह उनके लिए और उनके अन्दर तथा उनके द्वारा होने वाले परमेश्वर के कार्य के लिए निरंतर प्रार्थना कर रहा है। उसने प्रार्थना की कि:

- परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे – तुम्हें अपनी बुलाहट के योग्य जीवन जीने में सक्षम बनाए।

- परमेश्वर अपनी भलाई की हर इच्छा को पूरा करे – परमेश्वर तुम्हारे भीतर अपना भला कार्य पूरा करेगा और उन सभी अच्छी बातों को सिद्ध करेगा जिन्हें वह तुम्हारे द्वारा करना चाहता है।
- परमेश्वर विश्वास के कार्य को सामर्थ्य के साथ पूरा करे – परमेश्वर तुम्हारे विश्वास के कार्य को अपनी शक्ति से पूर्ण करे, ताकि तुम देख सको कि जो कुछ भी तुम विश्वास से करते हैं, उसमें प्रभु की सामर्थ्य तुम्हारे साथ है और उसे पूरा करती है।
- यीशु का नाम तुम में महिमा पाए – तुम्हारे जीवन के द्वारा प्रभु की महिमा और उसका आदर हो।
- और तुम भी उसमें महिमा पाओ – और तुम भी देखो कि परमेश्वर तुम्हारे जीवन को सम्मानित करता है। और यह सब परमेश्वर के अनुग्रह के कारण होता है।

2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2

उसका आना और हमारा उसके साथ इकट्ठा होना

1 हे भाइयो, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं
2 कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा, जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ।
3 किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि वह दिन न आएगा जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो।
4 जो विरोध करता है, और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को ईश्वर ठहराता है।
5 क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहाँ था, तो तुम से ये बातें कहा करता था?

थिस्सलुनीकियों को ऐसा डर सता रहा था कि कहीं वे 'रैप्चर" से चूक तो नहीं गए हैं और 'महा क्लेश' (प्रभु के दिन) के लिए पीछे तो नहीं छूट गए हैं। इसी कारण वे परेशान थे। पौलुस ने उन्हें स्पष्ट रूप से सिखाया कि विश्वासियों के रूप में हम उठा लिए जायेंगे और हम पृथ्वी पर परमेश्वर के क्रोध के दिन से बच जायेंगे।

वह 'पाप का पुरुष', 'विनाश का पुत्र', जो विरोध करता है और हर एक से जो ईश्वर कहलाता है अपने आप को ऊँचा ठहराता है; यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में परमेश्वर की तरह बैठता है और खुद को परमेश्वर बताता है। यह स्पष्ट रूप से उस 'मसीह-विरोधी' के विषय में है जिसके बारे में दानिय्येल ने बताया था, यीशु ने भी इसका उल्लेख किया था, और बाद में यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य में उस पर प्रकाश डाला था। दानिय्येल ने एक व्यक्ति का वर्णन किया है: वह राजकुमार जो आने वाला है (दानिय्येल 9:26), क्रूर दृष्टिवाला राजा (दानिय्येल 8:23), स्वेच्छाचारी राजा (दानिय्येल 11:36-45)। प्रभु यीशु ने भी एक व्यक्ति का वर्णन किया: वह जो अपने ही नाम से आता है (यूहन्ना 5:43), और विनाशकारी घृणित वस्तु जिसके बारे में दानिय्येल ने कहा था (मत्ती 24:15)।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना, दोनों ही उन बातों का वर्णन करते हैं जो मसीह-विरोधी करेगा। वह चाहेगा कि उसकी पूजा की जाये। वह यरूशलेम के मंदिर में खुद को परमेश्वर के रूप में स्थापित करेगा, परमेश्वर की निंदा करेगा और हर किसी से अपनी उपासना करवाना चाहेगा (दानिय्येल 9:27; दानिय्येल 11:31; दानिय्येल 12:11 और प्रकाशितवाक्य 13:14,15 और मत्ती 24:15,21,29-31)।

परमेश्वर का मंदिर: यह एक वास्तविक मंदिर है जो यरूशलेम में स्थापित किया जाएगा और प्रारंभिक मसीहियों ने भी इसे इसी रूप में समझा था।

इसलिए, *"हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन और उसके पास हमारे इकट्ठा होने"* तथा *"उस दिन"* के बीच—जब वह *"धधकती हुई आग में उन लोगों से बदला लेने आएगा जो परमेश्वर को नहीं जानते... और अपने पवित्र लोगों*

में महिमा पाएगा"—यह वह समय है जब 'पाप का पुरुष', 'विनाश का पुत्र' यानी मसीह-विरोधी अपना दुष्ट कार्य करेगा।

वह जो अब रोक रहा है, रास्ते से हटा दिया जाएगा

- **वचन 6-8:**

6 तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे अभी रोक रहा है कि वह अपने ही समय में प्रगट हो।
7 क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा।
8 तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा।

यह एक बहुत ही दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण वचन है, जिसकी अलग-अलग विद्वानों और बाइबल शिक्षकों ने अलग-अलग व्याख्याएं दी हैं। हम इस पर अपनी समझ संक्षेप में पेश करेंगे (यदि आपकी राय अलग है, तो कोई बात नहीं)।

यह हिस्सा हमें सिखाता है कि कोई चीज़ ऐसी है जो 'मसीह-विरोधी' को प्रकट होने से रोक रही है। जब वह रोकने वाली चीज़ रास्ते से हट जाएगी, तब मसीह-विरोधी सामने आ जाएगा।

ज़ाहिर है, इस बात पर काफी बहस हुई है कि "वह रोकने वाली वस्तु क्या है?"

हमें सबसे पहले यह ध्यान देना चाहिए कि पद 6 में जिस *"रोकने वाली वस्तु"* का ज़िक्र है, वह कोई व्यक्ति नहीं है। पद 7 में जिस "वह" (पुरुषवाचक सर्वनाम) का दो बार इस्तेमाल किया गया है, वह मूल यूनानी (Greek) टेक्स्ट में नहीं है। "वह" शब्द का इस्तेमाल करना असल में भ्रम पैदा करता है और यह पद 6 में इस्तेमाल की गई "रोकने वाली वस्तु" के साथ मेल नहीं खाता।

- **वचन 7 में:**

"वह जो अब रोकता है" का सही अनुवाद "जो उसे अभी रोकता है" होना चाहिए।

"जब तक वह दूर न किया जाए" का सही अनुवाद "जब तक इसे हटा न दिया जाए" होना चाहिए।

तो अगर हम पद 7 को "वह" शब्द के बिना सही तरीके से कहें, जो कि वास्तविक लेखों में नहीं है...

7 क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा। '

पवित्रशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते, हम यह प्रस्ताव रख सकते हैं कि "रोकने वाली चीज़" या तो (अ) पवित्र आत्मा हो सकती है या (ब) कलीसिया। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि क्लेश के सात वर्षों के दौरान पवित्र आत्मा सक्रिय रहेगी और कार्य करती रहेगी। इसलिए, पौलुस ने कलीसिया के बादलों पर उठाए जाने के बारे में जो पहले सिखाया है (1 थिस्सलुनीकियों 4:14-18), उसी के कारण हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि "रोकने वाली वस्तु" कलीसिया है। एक बार जब कलीसिया को रास्ते से हटा दिया जाएगा, तब वह पाप का पुरुष, विनाश का पुत्र प्रकट होगा।

हम जानते हैं कि क्लेश के समय में भी लोग यीशु पर विश्वास के द्वारा और पवित्र आत्मा के कार्य से बचाए जाएंगे। लेकिन कलीसिया, जो कि मसीह की देह है, जैसा कि हम आज इसके स्वरूप को जानते हैं, उसे उठा लिया जाएगा।

- **वचन 9-12:**

9 उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ्य, और चिह्न, और अद्‌भुत काम के साथ,
10 और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता।
11 इसी कारण परमेश्‍वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें,
12 ताकि जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं, वे सब दण्ड पाएँ।

मसीह-विरोधी, शैतान की शक्ति के साथ आता है और झूठे चिन्ह और चमत्कार दिखाता है। वह लोगों को उद्धार से भटकाने के लिए धोखे की शक्ति का उपयोग करता है। यह वह समय होगा जब परमेश्वर लोगों को भारी भ्रम में पड़ने देंगे, ताकि वे झूठ पर विश्वास करें।

उद्धार के लिए चुने गए

- **वचन 13,14:**

13 हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्‍वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्‍वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ,
14 जिस के लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्‍त करो।

क्लेश के समय के उस बड़े धोखे के विपरीत, पौलुस थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता है कि वे यीशु मसीह के सुसमाचार पर विश्वास करने के कारण चुने गए, बचाए गए और पवित्र किए गए हैं।

शिक्षाओं को थामे रहो

- **वचन 15-17:**

15 इसलिये हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो।
16 हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही, और हमारा पिता परमेश्‍वर, जिसने हम से प्रेम रखा और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है,
17 तुम्हारे मनों में शान्ति दे और तुम्हें हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़ करे।

पौलुस उन्हें दृढ़ रहने और उन परंपराओं (शिक्षाओं) को थामे रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो उन्हें मौखिक रूप से और लिखित रूप में दी गई थीं।

2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 3
हमारे लिए प्रार्थना करो

1 अन्त में, हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना किया करो कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ,
2 और हम टेढ़े और दुष्‍ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्‍वास नहीं।

पौलुस ने प्रार्थना का निवेदन किया ताकि परमेश्वर का वचन सामर्थी रीती से उसके और उसके समूह के द्वारा फैलाया जाए, और महिमा पाए, और वे ईश्वरीय रूप से सुरक्षित रहें। ये वे विशेष बिंदु हैं जिनके लिए हम उन लोगों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जो बाहर सेवा कर रहे हैं।

प्रभु विश्वासयोग्य है

- **वचन 3-5:**

[3] परन्तु प्रभु सच्चा है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेगा।
[4] हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है कि जो–जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम मानते हो, और मानते भी रहोगे।
[5] परमेश्‍वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुआई करे।

पौलुस परमेश्वर पर भरोसा रखता है जो उसे दृढ़ रखता और उसे उस दुष्ट से भी बचाए रखता है।

शांति से काम करे

- **वचन 6-15:**

[6] हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि तुम हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता और जो शिक्षा उसने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता।
[7] क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए, क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले,
[8] और किसी की रोटी मुफ़्त में न खाई; पर परिश्रम और कष्‍ट से रात दिन काम धन्धा करते थे कि तुम में से किसी पर भार न हो।
[9] यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं, पर इसलिये कि अपने आप को तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएँ कि तुम हमारी सी चाल चलो।
[10] क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।
[11] हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम नहीं करते पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं।
[12] ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।
[13] तुम, हे भाइयो, भलाई करने में साहस न छोड़ो।
[14] यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने तो उस पर दृष्‍टि रखो, और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो।
[15] तौभी उसे बैरी मत समझो, पर भाई जानकर चिताओ।

यह दूसरा मामला था जिसमें पौलुस थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को शायद बहुत ही कड़े तौर पर संबोधित करता है। वह विश्वासियों को काम करने और अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों का स्वयं ध्यान रखने का निर्देश देता है। जब पौलुस यह पत्र लिख रहा था, तब वह कुरिन्थ में अक्किला और प्रिसकिल्ला के साथ तंबू बनाने का काम कर रहा था। यह उन 18 महीनों की बात है जब वह वहां कलीसिया खड़ी कर रहा था (प्रेरितों 18:1-4)। हम यह भी मान सकते हैं कि उसने दूसरी जगहों पर भी, जहाँ वह प्रचार करने और कलीसिया बनाने गया, यही काम किया होगा।

अन्तिम नमस्कार

- **वचन 16-18:**

[16] अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे,
[17] मैं, पौलुस, अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूँ। हर पत्री में मेरा यही चिह्न है; मैं इसी प्रकार से लिखता हूँ।
[18] हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे। अमीन।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: 2 थिस्सलुनीकियों 1-3

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1) *प्रभु यीशु के दो बार आने के बीच अंतर पर चर्चा करें:*
   1 थिस्सलुनीकियों 4:14-18 और 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10 की तुलना करें।

2) *2 थिस्सलुनीकियों 2:1-8 में जिस "रोकने वाली वस्तु" की चर्चा की गयी है उस पर विचार विमर्श करें।*

3) *2 थिस्सलुनीकियों 3:6-15 के आधार पर विश्वासियों के स्वयं मेहनत करने पर दी गयी शिक्षा की समीक्षा करे।*

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

एक साथ मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए समाप्त करे।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org

उपदेश की रूपरेखा

यह उपदेश श्रृंखला प्रेरित पौलुस द्वारा लिखे गए पहली दो पत्रियों, 1 और 2 थिस्सलुनीकियों का हर एक पद दर पद अध्ययन है। इस श्रृंखला के चौथे भाग में हम 2 थिस्सलुनीकियों का अध्ययन करते हैं, जहाँ पौलुस दो मुख्य विषयों पर बात करता है: प्रभु यीशु का आगमन, और पृथ्वी पर जीवन जीते हुए काम करने की ज़िम्मेदारी, ताकि हम प्रभु के आने के लिए तैयार रहें।

मुख्य शब्द

1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों, उपदेश, उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा, मुफ्त बाइबल अध्ययन संसाधन।

संदर्भ और उद्धरण

जब तक कहीं और उल्लेख न हो, बाइबल के सभी वचन 'न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल 2020' (NASB) से लिए गए हैं। यूनानी और इब्रानी शब्दों के अर्थ 'थायर', 'स्ट्रॉन्स', और 'वाइन्स' जैसे प्रसिद्ध शब्दकोशों और बाइबल संसाधनों से लिए गए हैं।

बाइबल संबंधी परिभाषाएँ, इब्रानी और यूनानी शब्द और उनके अर्थ निम्नलिखित संसाधनों से लिए गए हैं:

थायर्स ग्रीक डेफिनिशन्स: 1886, 1889 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

स्ट्रॉन्स हिब्रू एंड ग्रीक डिक्शनरीज़: जेम्स स्ट्रॉन्ग द्वारा स्ट्रॉन्स एग्जॉस्टिव कॉन्कॉर्डेंस; 1890 में प्रकाशित; STD, LLD सार्वजनिक डोमेन।

वाइन्स कम्प्लीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स: © 1984, 1996, थॉमस नेल्सन, इंक., नैशविले, TN।

माउंस कंसाइज ग्रीक-इंग्लिश डिक्शनरी: विलियम डी. माउंस और रिक डी. बेनेट, जूनियर द्वारा संपादित (1993)।

वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट: आर्चीबाल्ड थॉमस रॉबर्टसन; 1930-1933 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टेस्टामेंट: मार्विन आर. विंसेंट, डी.डी. (1886)।